2

प्रकृति-चित्रण (Nature Study)

अनादिकाल से प्रकृति और मानव का संबंध अटूट रहा है। प्रकृति ही मानव को जीने की प्रेरणा देती रही है और उसके साथ–साथ मानव को प्रकृति की सुन्दरता की अनुभूति कराती रही है। मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जिसमें सुन्दरता का बोध है और इसलिए इस सुन्दरता को चिरंतन बनाने के लिए वह इसे चित्रकला तथा मूर्तिकला का रूप देने का प्रयास करता रहा है। इनमें प्रकृति के अनेक रूप जैसे पहाड़, नदियाँ, सागर, पेड़-पौधे, फूल के अनेकों रूप तथा रंग भी मानव को सबसे अधिक आकर्षित करते हैं।

प्रकृति के हर तत्व में जीवन का रूप स्पष्ट है। प्राकृतिक वस्तु गतिशील है। हर वस्तु अलग–अलग भाव को प्रकट करती है। यह भाव प्राकृतिक वस्तु के रंग, आकार तथा बनावट (Texture) द्वारा अभिव्यक्त होता है। इन सबको ध्यान में रखते हुए आप एक सुन्दर चित्र का निर्माण कर सकते हैं।

प्रकृति-चित्रण में निम्नलिखित तत्वों का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है जैसे: इन तत्वों का उपयोग बहुत सावधानी से चित्रों की आवश्यकता के अनुसार करना चाहिए। इन सारे तत्त्वों का सही उपयोग केवल मात्र अभ्यास द्वारा ही संभव है।

परिद ष्टि (Perspective)
संतुलन (Balance)
संयोजन (Composition)
समन्वय (Harmony)
रंग (colour)

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आप–

- विभिन्न प्राकृतिक वस्तुओं की आकृति बना सकेंगे;
- संयोजन के साथ चित्र बना सकेंगे;
- चित्रों में समन्वय (Harmony) के साथ जल रंगों का सही प्रयोग कर सकेंगे; और
- चित्र बनाते समय संतुलन (Balance) को ध्यान में रख कर चित्र बना सकेंगे।

टिप्पणी

प्रकृति-चित्रण में परिद ष्टि (Perspective)

प्रकृति-चित्रण करते समय हमें परिद ष्टि का विशेष ध्यान रखना चाहिए। परिद ष्टि (Perspective) में नियमों के अंतर्गत संतुलन (Balance), वैनिशिंग पॉइंट आदि का आभास होना बहुत आवश्यक है। यह तभी संभव है जब हम पास की वस्तु को बड़ा व उसके चित्रण को विस्तार से अंकित करें या टोन (Tone) को दिखायें जहां पीछे की वस्तु को हल्का और छोटा दिखायें। उदाहरण स्वरूप चित्र में पास का पेड़ घना तथा बड़ा दिखाया गया है। इसी तरह पास का रास्ता और झोपड़ी की छत भी उसी अनुपात से बनायी गयी है। इसमें छत के सामने का भाग बड़ा व दूर का छोटा दिखाया गया है। पीछे की पहाड़ियां छोटी–छोटी नजर आती हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्रकृति-चित्रण में उन आवश्यक तत्वों में से यदि किसी की भी कमी रहे तो वह चित्र संपूर्ण नहीं कहलाया जाता है।

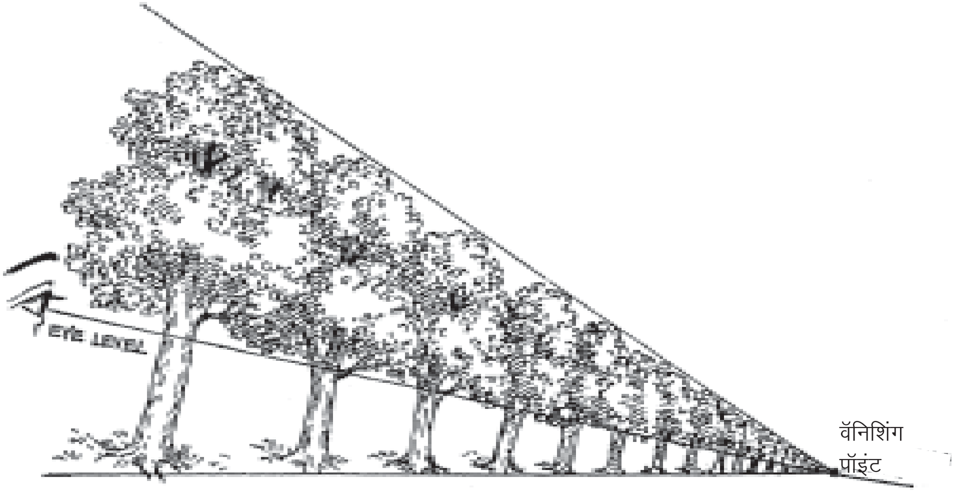

चित्र सं. 1

संतुलन (Balance)

चित्र-रचना में संतुलन की भूमिका महत्वपूर्ण है। चित्र बनाते समय कागज की स्पेस को इस तरह सजाना चाहिए, ताकि चित्र के हर अंश का भार समान हो। जैसे किसी चित्र

में यदि एक तरफ विशाल पेड़ है तो दूसरी तरफ झाड़ी या कोठी का चित्र बनाएं तो चित्र सही संतुलन में नहीं कहा जाता (चित्र सं. 2 और चित्र सं. 3 देखें)। कागज का स्पेस संतुलन में होना चाहिए।

चित्र सं. 2

चित्र सं. 3

संयोजन (Composition)

चित्र में संयोजन की अहम भूमिका होती है। प्रकृति-चित्रण में द श्य को चित्रित करते समय परिद ष्टि, संतुलन, समन्वय (Harmony) आदि बातों को ध्यान में रखते हुए, वस्तु या तत्वों को सुंदर रूप में व्यवस्थित करना ही संयोजन है। चित्र 4 और 5 देखें।

चित्र सं. 4

चित्र सं. 5

समन्वय (Harmony)

आप अपने चित्र में समन्वय दिखाने के लिए हर वस्तु या फॉर्म को इस तरह संयोजित कीजिए जिससे चित्र में फॉर्म या वस्तु के रूपों का गहरा संबंध स्थापित हो जाए, और चित्र अपना सही रूप प्राप्त कर ले। चित्र में समन्वय (Harmony) प्राप्त करने के लिए रंगों की अहम् भूमिका होती है। रंगों की सही समानता से वस्तु में बहुत ही सरलता व सहजता के साथ लय (Rhythm) और समन्वय को प्राप्त किया जा सकता है। चित्र 6 देखें।

चित्र सं. 6

रंग (Colour)

प्रकृति-चित्रों में जल-रंगों का प्रयोग बहुत ही ध्यान पूर्वक करना चाहिए। पहले विद्यार्थी को हल्के रंगों का प्रयोग करना चाहिए, फिर मध्यम गहरे रंग और बाद में गहरे रंग। चित्रों में पास की वस्तु में साफ और उजला रंग भरें जैसे लाल, पीला, नारंगी और दूर की वस्तु के लिए कुछ घुंधले रंगों का प्रयोग करें जैसेः– नीला, बैंगनी, भूरा (Brown) इत्यादि। चित्र संख्या 7 में फूलों की और चित्र संख्या 8 में भूद श्य के रंगों के प्रयोग विभिन्न स्तरों को देखें।

स्तर-1 स्तर-2

चित्र सं. 7

टिप्पणी

स्तर-3

स्तर-4

चित्र सं. 7

स्तर-1

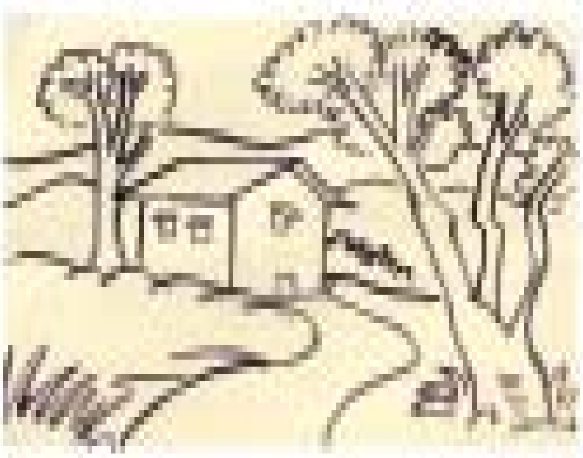

स्तर-2

चित्र 8

स्तर-3

स्तर-4

चित्र सं. 8

सारांश

प्रकृति चित्रण में रेखाचित्र की अहम भूमिका है, इसलिए परिद ष्टि और अनुपात के साथ चित्र बनाना आवश्यक होता है। परिद ष्टि (Perspective), चित्र के स्पेस में गहरापन लाने में सहायक होता है। परिद ष्टि के नियमानुसार सामने की वस्तु बड़ी और पीछे के वस्तु छोटी दिखाई देती है। पीछे जाने वाली सामान्तर रेखाएं अपना रूप बदलकर धीरे–धीरे एक दूसरे से मिलती हैं। रेखांकन का गहराई तथा हल्केपन द्वारा भी सामने की वस्तु के साथ दूर की वस्तु का अंतर दिखाया जा सकता है। संयोजन के लिए संतुलन तथा समन्वय का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है।

प्राकृतिक चित्रण में जब रंगों का प्रयोग होता है तब प्राकृतिक वस्तुओं में स्वाभाविक रंगों का प्रयोग करना चाहिए। पर कभी–कभी चित्र की सुंदरता के लिए इन रंगों को थोड़ा बहुत बदला जा सकता है, अर्थात आवश्यकतानुसार रंगों के उजलेपन को कम या अधिक कर सकते हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. रेखाओं द्वारा पेड़ या पौधे का संतुलित चित्र बनाएं।
2. जल-रंग द्वारा पेड़ और झोपड़ी के साथ प्रकृति के द श्य का संतुलित चित्र बनाएं।
3. फल–फूल और फूलदान का स्केच बनाइए और उसके बाद जल-रंगों का प्रयोग करें।

टिप्पणी

4. पहाड़, नारियल के पेड़, पत्थर तथा सागर का पहले अलग–अलग जगह पर स्केच बनाइए। इन स्केचों के आधार पर दो विभिन्न संयोजन में चित्र बनाइए। इन चित्रों में पोस्टर रंग द्वारा रंग भरें।
5. अपने शहर के किसी नजदीक बगीचे में जाइए तथा विभिन्न प्रकार के फूलों का स्केच बनाइए।
6. परिद ष्टि का ध्यान रखते हुए बगीचे के पेड़ों की पंक्तियों का चित्रांकन कीजिए। जलरंगों द्वारा इनमें रंग भरिए।

मालार्ड एट द एड्ज
चित्रकार–आरकीबल्ड थोर बार्न
(जल रंग)

ड्राइंग
चित्रकार–गोपाल घोष
(जल रंग + ब्रश)